❀ श्री सीतारामचन्द्रायनमः ❀

11658

श्रीरामभक्तिविलास

प्रकाशक—

महात्मा मथुरादास

स्थान मेगुरिहाई रीवां राज्य मु० अमिलिकी।

पो० डिहिया (मध्य प्रदेश)

प्रथमवार ५००] १९६२ [मूल्य नित्य प्रेम पाठ

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्या।

भूमिका

इस श्रीसीताराम भक्ति विलास में श्रीभगवत् सम्बन्धी कविता की रचना के वास्ते श्रीगुरुदेव की आज्ञा से श्रीसीता-रामजी की याचना बार बार करते हुये श्रीगणेशजी श्रीसरस्वती जी तथा शंकरजी वा हनुमानजी इन श्रीसीताराम उपासी तथा सीताराम भक्ति दाताओं से प्रार्थना करते हुये विनम्र भाव दीनता पूर्वक अपने बुद्धि अनुसार कवित्त, दोहा, कुन्डलिया तथा चौपायों तथा गायन की रीति पर कविता की गई है जिसमें श्रीसीताराम नाम की महिमा तथा महात्म तथा गुन और सन्त जनों की महिमा तथा सन्त संग की महिमा और अपने को बार-बार अति धिक्कार देते हुये सबसे श्रीसीताराम-जी की याचना दीनता प्रगट की गई है।

इस पुस्तक के पढ़ने से श्री सीताराम भक्ति जो सर्व लाभों से परे है प्राप्ति होगी।

प्रकाशकः—

महात्मा मथुरा दास।

❀ श्रीसीतारामायनमः ❀ श्रीगणेशायनमः ❀

❀ श्रीराम भक्ति विलास ❀
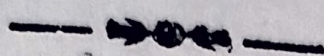
दोहा—श्रीगुरु चरण प्रणाम करि उर धरि वचन सप्रीति।
सीय राम पद प्रीति हित करौं कवित की रीति॥१॥

❀ कवित्त ❀

श्रीगुरुदेव महेश को रूप श्रीराम पदाम्बुज प्रेम भरे।
श्रीराम को नाम अधार सदा हियमें रघुनाथ का ध्यान धरे॥
कामादि विकार जो वेद कहैं तिनमें नहिं धोखेउ भूलि परे।
मथुरा गुरुदेव मनाय हिये चहै भक्ति सदा कबहूँ न टरे॥२॥

दो०--जयति सरस्वति जगजननि करनि सकल शुभ काज।
राम चरण रति मैं चहौं पुरवहु मातु सो आज॥३॥

कवित्त—गनन अधीश सीताराम व्रतधारी सदा जगमें प्रथम पूज्य आपही प्रधान हैं। मूसके सवार उमा प्राणके अधार नाथ बुद्धि सिद्धि दाता आप सरिस न आन हैं। मोदक औ मेवा पान फूलते प्रसन्न रहो भाल में त्रिपुन्ड अर्ध चन्द्र के समान हैं। मथुरादास आस करि दीनता सुनावै नाथ दया करि दीजै राम भक्ति वरदान हैं॥४॥

सवैया—शिवशंकर दीन दयाल प्रभू शरणागत के प्रतिपाल सही। कहूँ दीन की आरत नाद सुनौ तौ त्रिशूल लै क्लेश

निवारो तहीं ॥ जल अच्छत पत्र ते होहु खुसी नहिं चाहते मेवा न दूध दही । मथुरा कछु और न मांगे प्रभू चरणाम्बुज राम के भक्ति चही ॥ ५ ॥

क०—असरन के सरन पाल दीनन के दानी बड़े पापिन पुनीत शम्भु आपही बनावते । आपके समान दानी जगमें न आन कहूँ वेद औ पुरान सन्त नित्य यस गावते । रामव्रतधारी मन वानी और कर्मनाथ आपके हृदय में सदा राम बास पावते । मथुरा राम चरण सरोज प्रेम मांगै सदा तूँ हो दानी दीनन के वेद यों बतावते ॥ ६ ॥ सीस जटा धारी भाल चन्द्रमा विराजमान कन्ठ में गरल ताते नीलकन्ठ नाम हैं । गले मुन्डमाल तन चिता भस्म राजै स्वेत कुन्द दर गौर भक्त मन अभिराम हैं । करमें त्रिशूलपट केहरी को छाल तन बैल के सवार शम्भु सदाशिव धाम हैं । वाम भाग सैल सुता सीस में विराजैं गंग मथुरा राम भक्ति दै पुरावो मन काम है ॥ ७ ॥ काशी के निवासी सदा आनद के रासी शम्भु भवन कैलास राम प्रेम में प्रधान हैं । स्वामी भाव सखा भाव सेवक को भाव भलो प्रेम नेम मूर्तिं दोनों एक ही समान हैं । राम और शम्भु मूर्तिं देखन को भिन्न भिन्न गुन सील एक दोनों भेद नहीं आन हैं ॥ शंकर औ राम मूर्तिं दया के निधान जानि मथुरादास मांगै राम भक्ति वरदान है ॥ ८ ॥ राम पद पंकज में प्रेम देहु भोलानाथ आपके चरण सदा सीस को नवाऊँ मैं । राम भक्ति दाता सदा राम के पियारे

नाथ कृपा दृष्टि कीजे राम भक्ति घर पाऊँ मैं। गुन हीन बल-हीन बुद्धि हीन विद्याहीन भजन विहीन कैसे राम गुन गाऊँ मैं। मथुरादास मांगै बुद्धि जागै अनुरागै मन राम गुन गाइ राम भक्ति सरसाऊँ मैं ॥ ९ ॥ हर हर कहेते हर हरत कलेश सारे शंकर कहेते संका दूर होति मन की। शिव शिव कहेते कल्यान होत जीवनको भव-भव कहेते भय भागि जाति जनकी। शम्भु शम्भु कहे सब काम सिद्ध करैं सम्भु रुद्र रुद्र कहे व्यथा नास होति तन की। मथुरादास आस करि मांगै करजोरि नाथ देहु भक्ति शम्भु सीताराम के चरण की ॥ १० ॥ दानी शम्भु सरिस न दूजो और तीनि लोक जाचकन तुरत अयाचक बना-वते। पान फूल अच्छत अरु चन्दन ते त्रिप्त होत अधिक प्रसन्न होत गाल को बजावते। दीनन की दीनता विलोकत ही द्रवैं आसु तेही हेतु वेद आसु तोष नाम गावते। मथुरादास राम के चरण भक्ति मांगै सदादेहु भोलानाथ महादानी कहवावते॥११॥ पवन किशोर बरजोर खल नासन में राम भक्त मे प्रधान जानत जहान है। विद्यामें प्रवीन गुन गायक नवीन नित्य राम प्रेम पूरण पयोधि के समान हैं। बलको न कूत भगवन्त प्रिय प्राण तुल्य राम काज करिवे को आतुर महान है। ऐसो जग जाहिर जहान तूँ हे हनूमान मथुरा राम भक्ति मांगै दीजे नाथ दान है ॥ १२ ॥ ग्यान गुन धाम दया बुद्धि के निधान कपि केसरी किसोर राम द्वार रखवार हो। जातुधान जूथ छन एक मे निपा-

तक हौ भक्त हितकारी राम भक्ति के अगार हौ। सीताराम चरण सरोज रस सेवी सदा प्रेम नेम पूरन पयोधि तूँ अपार हौ। सीताराम चरण सनेह देहु महावीर मथुरादास हेतु एक आपही अधार हौ॥ १३। भक्ति के प्रभाव कपिराज को मिलायो राम लंका में प्रवेस होत लंकिनी को मारे हौ। भक्ति के प्रभाव अच्छ मारि कै जरायो लंक औषधि को जात कालनेमि को संहारे हौ। भक्ति के प्रभाव द्रोण पर्वत उखारि शीघ्र सञ्जीवनि आनि शेष प्राण को उबारे हौ। आप हनुमन्तराम भक्ति दृढ़ प्रेमी सदा मथुरादास माँगै भक्ति जौन उरधारे हौ॥ १४॥

स०—दीनन के हितकारी हैं आप औ दुष्टन को सदा त्रास करइया। राम के भक्त सोहात तुम्हैं तिनको रघुनाथ की भक्ति देवइया॥ हे हनुमन्त सहाय करो भवसिन्धु के बीच फँसी मेरी नइया। आरत नाद करै मथुरा गहिबांह तूँ कीश निकारि लेवइया॥ १५॥ काहू के है बल सम्पति का अरु काहू के देह का गर्व है भारी। काहू के विद्या का है अभिमान औ काहू के गर्व है जाति विचारी। मेरे भरोस तुम्हारो सदा हनुमान करो तूँ सहाय हमारी। मागत है मथुरा यह नाथ करैं उर बास साकेत विहारी॥ १६॥ गुन गान करौं रघुनन्दन का अरु नाम जपौं रघुनन्दन का। अरु तीरथ जाउँ सदा प्रभु के पुनि लीला लखौं भव भञ्जन का॥ सियराम के भक्त लगैं प्रिय त्यौं दृग दर्श करैं जग वंदन का। हनुमन्त सहाय करो मथुरा चहै भक्ति

सदा तजि वृन्दन का ॥ १७ ॥ राम राम राम मन रटुतैं दिवस रात राम नाम वेद सदा तारक बतावैं हैं। राम नाम माई बाप स्वामी गुरु राम नाम सनकादि सारद शिव नारदादि गावैं हैं॥ पापिन अनेकन सुधारे सीताराम नाम तारक कहत राम पुण्य रासि आवैं हैं। मथुरादास कहत पुकारि यों पुरान वेद भजन विहीन नर स्वान सों कहावैं हैं॥ १८ ॥ राम राम कहत पराइ जात पाप पुञ्ज जैसे देखि सिंह गज निकर परात हैं। जैसे कलि काल को विलोकि भागि जात धर्म जैसे बाज देखि लवा झुन्ड लुकिजात हैं॥ खगराज देखिकै लुकाइ जात सर्प जैसे पवन के जोर ते त्यों मेघ बिललात हैं। मथुरादास राम के कहते पाप पुञ्ज जात मृग झुन्ड भाजत ज्यों देखि कै किरात हैं ॥ १९ ॥ गज अरु गनिका अजामिल रैदास भील सवरी औ गीध कपि केवट उधारे हैं। पाहन जमन औ किरात कोल आदि खल निसिचर खस पापिन अनेकन को तारे हैं। त्रिविध अधर्मिन अकर्मिन अनेकन के अगुन मिटाइ गुनवान करि डारे हैं। ऐसे जग अमित गरीबन निवाजे राम मथुरादास ताहि तुम मनते विसारे हैं॥ २० ॥ जउन दिन बीते सो तौ बीति गए जैसे तैसे अब मानु कहत पुरान वेद जउन हैं। काम क्रोध आदि जो हैं संगी तेरे आठौ जाम जानै नहीं मथुरादास नासैं तोहि तउन हैं। तू है बड़ो पामर न जानै निज हानि लाभ अवचेतु सावधान जानु हितू कउन है। राम पद पंकज में कीन्हेउ ना सनेह मन्द

त्राता तेरो और नहीं एक सीता रउन हैं ॥ २१ ॥ तूँ है अति आलसी अचेत अज्ञान बड़ो अधम अलायक अकर्ता विना काम को। कामी क्रूर कपटी कठोर करतूति हीन कायर कुल कंटक है चेरो वाम दाम को। पापमे परायन पर पीर को करन हार पर पाप प्रगटन के बकता आठो जाम को। मतिमन्द मथुरा जन्म व्यर्थ में नसाय दीन्हेउ कियउ ना सुसंग ना भयो गुलाम राम को ॥ २२ ॥ चेतु चेतु चेतु अब चेरो बनु राघव को चरन चित लाउ चख खोलु हिये हेरु तौ। नर तन पाय तूँ न भूलु भव-सागर में निज कर आपने न कन्ठ छुरी फेरु तौ। उत्तम कुल उत्तम तन उत्तम छिति मध्य जन्म उत्तम विचार सत संग मन धारु तौ। न तु कल्प कोटिलौं नरक में अवटि जैहैं मतिमन्द मथुरा सीताराम को पुकारु तौ ॥ २३ ॥ शरण शरण अवशरण कमल पद शरण गहत जग नसत सकल भय। कटत सकल भव जतन पतन अध रहत न अघ तन बढ़त भजन लय। दशरथ तनय परम पद कर अज शरण गहत अघ करत सकल छय। जलज चरण तर पर छल तज मन भजन करत जग लहत परम जय ॥ २४ ॥ राम राम कहत पुनीत होत पापी जन राम नाम सन्तन के प्राण को अधार है। राम नाम लेत भवसागर सुखार जात राम नाम लेत नसैं पापन पहार हैं। राम नाम लेत अघ नासत हैं दया सिंधु सिरते उतारि देत पापन के भार हैं। मथुरा दास राम नाम सुख को समुद्र पाइ छोंड़ु जग जाल लूटु आनंद अपार है ॥ २५ ॥

दो०—दियो दिव्य तन मनुज तोहिं, दीनबन्धु श्रीराम।
करहु गान श्रीराम गुन, सोक धाम तजि काम॥ २६॥

क०—ऐसे दया सिंधु निज भक्त रखवारे राम दास हित वपुष नृसिंह को बनायो है। सुत हित नाम लै पुकारेउ जब अजामिल नाम के प्रभाव नाथ ताहि अपनायो है। गनिका पढ़ायो कीर जपन को मारेउ कोल मथुरा हराम कहि सूकर बतायो है। भक्तन अधार सदा दीन रखवार राम पापिन अपार जग पावन बनायो है। २७॥ भाव औ कुभाव क्रोध आलस ते नाम लेत नाम के प्रभाव राम ताहि अपनावें हैं। भाव ते उचारि नाम कीन्हेउ विष पान शम्भु पायो फल अमृत को वेद यों बतावैं हैं। उलटो नाम जाप बालमीक मुनि राम कीन्हेउ नाम के प्रभाव सो भविष्य यस गावैं हैं। क्रोध ते दसानन कुम्भकरन जपेउ आलस ते मथुरा भवसागर में फेरि नहिं आवैं हैं॥ २८॥ नाम के प्रभाव अविनासी महादेव भये ताही के प्रभाव काशी मुक्ति के देवइया हैं। नाम के प्रभाव शेष धारत धरा को सीस नाम के प्रभाव विधि सृष्टि के रचइया हैं॥ नारद मुनि राम नाम देत उपदेश सबैं जीवन अधार राम नाम पिता मइया हैं। मथुरादास राम नाम का अधार राखु मन राम नाम तोहि भवपार उतरइया हैं॥ २६॥ मानु सिख मानु हठि छांड़ि भजु राम पद भजन विहीन सुख स्वप्नहुन सोइहै। मोह बस मूढ़ तैं बने पहार पापन के अब चेतु सठ काहे बैठे जन्म खोइहै। जिन

हेतु पाप को कमायो तन खोयो व्यर्थ सो तौ अब तोहिं द्रिग कोरते न जोइहैं । मानुष को तन पाइ व्यर्थ ना गमाइ देहु मथुरा यम धाम नातौ सीस धरि रोइहैं ॥ ३० ॥ कठिन कलिकाल कियो सकल विहाल जग तामे निस्तार अस वेद कहैं गाइकै। राम नाम जाप अरु राम नाम गुन गान राम को चरित्र सुनौ तन मन लाइकै । सुक सनकादि नारदादि मुनि सिद्ध देव राम नाम कहत सुनत हरषाइकै। मथुरादास राम की भजन सुधा सिंधु पाइ करु सदा पान लेहु आनद अघाइ कै॥ ३१ ॥

स०— बिन मेघ अकास ते वारि गिरै जल जन्तु बिना जल केलि करै । वरु पावक जो प्रगटै ससि ते कबहूँ सिकता ते जो तेल झरै । अरु कूर्म के पीठ में वार जो हो वरु बाँझ का पुत्र संग्राम करै । श्रीराम के भक्ति बिना मथुरा भवसागर पार ना जीव तरै ॥ ३२ ॥ राम को नाम जपो तो सदा गुन गान करो सिय रामही का । कलि जज्ञ ना जोग ना ध्यान बनै व्रत संयम नेम का नामही का ॥ ना उपाय कछू करना इसमें तजि मोह जपो प्रभु नामही का । मथुरा सिय राम का नाम रटो इससे जग में है अरामही का ॥ ३३ ॥

क०— जागु मन मूढ़ सतसंगति में लागु अब नर तन पाइ जन्म व्यर्थ ना गमाउ रे । पुत्र पौत्र आदि सब स्वारथ के साथी जानु अन्त में तजैंगे तोहि वादि नेह लाउ रे । मनकी मलीनता मिटाइ सतसंग करु दिव्य उपदेस सुनि राम गुन गाउ रे ।

मथुरादास भक्ति हेतु आलस ना लाउ नेकु सन्तन ढिग जाइ राम दास कहवाउरे ।३४॥

दो०—मन तन बचन विकार तजि, राम नाम गुन गाउ।
महा घोर भवपार हित, कछु नहिं आन उपाउ ॥ ३५ ॥

क०—सन्तन संग पाय महा पापी अजामील तरेउ बारा-मुखी तरी संत संग के प्रभाउते। ध्रुव पायो अचल पद सन्त संग के प्रभाउ व्याध कर्म त्यागि बालमीक राम गावते। लंकाधीस भयो है विभीषण सत संग पाइ कीस राज भयो है सुकन्ठ संग पाउते। मथुरादास नर तन पाइ सत संगु लागु जग जाल छूटि जात सन्तन उपाउते। ३६॥ सन्तन के संग ते अनेक सुख सिद्धि होति खलन के संग हानि होति दोनों लोक की। सन्त संग कीन्हें अपवर्ग सुख प्राप्त होत खलन के संग वृद्धि होति सारे सोक की। स्वारथ के साथी सुत वनि ताहि जानि तजु करुतौ उपाउ मन चञ्चल के रोंक की। मथुरा मन वैन तन सन्त जन संग करु नातो परै आपत यमराज गन झोंक की ॥ ३७॥ सन्त संग किये मिलै राघव की भक्ति दिव्य जाके तुल्य लाभ जग दूसरो न आन है। जाहि जाने जगत हेराइ जात स्वप्न तुल्य जाने विन ताहि कहीं ठाहर ना ठौर है। जाति पांति धर्म कर्म गुनते विहीन होय राम भक्ति लीन ताहि जानो सिर मौर है। मथुरादास सन्त संग करि राम भक्ति लेहु काहे द्वार द्वार करै कूकर सों दौर है॥ ३८॥

दो०—स्वर्ग और अपवर्ग सुख, सन्त संग सम नाहिं।
मथुरा तजि सब कपट छल, रहु सन्तन संग माहिं ॥३९॥

क०—एही समहानि जग दूसरो न आन कछु नर तन पाइ जो भजै ना सुख धाम को। जउन प्रभु लोक परलोक के निबाहक हैं ताहि जो बिसारै ता समान जग वाम को। मनुज मुनीस देव दानव पतंग पसु ताके सम भलो ना जो जानै सीता-राम को। मथुरा राम चरण सरोज के गुलाम बनु छांड़ु छल छोभ लोभ मोह मद मान को॥ ४०॥ राम नाम को अधार राखु मन आठौ जाम राम नाम करता अरु पालक संहरता हैं। दीन के दयाल जन पालक खल सालक हैं जैसै राम नाम तैसै नामी जग भरता हैं। पाप पुञ्ज नासक कृशानु तूल रासि जैसे जगत निवास जन आनद के करता हैं। मथुरादास राम गुन कीर्तन को छोंड़ि काहे जग भ्रम जाल का भरोसा करि मरता है॥ ४१॥ राम नाम को प्रभाव महादेव जानैं भले काशी मुक्ति देत करि नाम उपदेश हैं। नाम को प्रभाव जग विदित बखानैं वेद जाके बल अग्र पूज्य सब ते गणेश हैं। नाम के प्रभाव भूमि भार धरैं सीस सदा जपत हमेस खेद मानत ना लेस हैं। मथुरा नाम को प्रभाव जगत प्रसिद्ध जानु नाम के जपेते पाप रहत ना लेस हैं॥ ४२॥ जग में अनेक जोनि जन्मे सठ कर्म वस सीताराम चरण सरोज तू न चीन्हेउ है। अब चेतु काहे भूमि भार होत बार बार मनुज सरीर पाय व्यर्थ खोइ दीन्हेउ है।

उत्तम तन दया बस दीन्हेउ जो दयाल राम ताके पद पंकज में प्रेम नहिं कीन्हेउ है। मथुरा मतिमन्द सीताराम को चरण ध्याउँ जाहि सदा शम्भु मन मानस में लीन्हेउ है ॥४३॥ सीताराम चरण सरोज में न कीन्हेउ नेह सन्त जन संग नहिं कीन्हेउ मन लाइकै। बालापन बालकन संग खेलि खेलि खोयो जुवापन जुवति संग रमेउ मन लाइकै। तीजो पन धन हेतु नीचन की सेवा कीन्हेउ पाप ना मिटायो सीताराम गुन गाइकै। मथुरा मतिमन्द चौथे पन में तौ चेतु अब नाम जपु संग करु तीर्थ बैठु जाइकै ॥ ४४ ॥

स०—राम का नाम सदा जपु बावरे नाहक को कस जन्म गमावै। जाके निते किया पाप अपारन ते तोहि अंत में काम ना आवैं ॥ काल कराल महा कलिकाल तहाँ जप नाम का वेद बतावैं। दिन राति भजो प्रभु को मथुरा जग में तू वृथा जनि नेह लगावैं ॥ ४५ ॥ पायो नर देह मन गायो नहीं राम गुन ध्यायो न परदार विन्द चेरो भयो काम को। पाउ ना बढ़ायो हेतु तीरथ श्रीराघव के मोह ना मिटायो सुत सम्पति औ वाम को। कीन्हेउ ना सुसंग परमारथ ना कीन्हेउ नेकु दीन्हेउ ना सुदान ना भयो गुलाम राम को। मथुरादास राम को कहायो ना वितायो देह काह भयो पायो तन हाड़ अउर चामको ॥४६॥ सीताराम चरण सरोज रस मधुप हो अमित प्रसूनन में नेह जनि लाउरे। रूप बिन्दु स्वाती जल विन्दु में लगाउ नेह मिलवे को

चातक समान नाम गाउरे। सोमरस पीवत चकोर ज्यों बिसारै देह तेही भांति प्रेम करि देह बिसराउरे। मथुरादास भ्रमर चकोर ज्यों पपीहा नेह सीताराम चरण सनेह सरसाउरे ॥ ४७ ॥

दो०— नाम जपो लीला लखो, करो राम गुन गान।
तीर्थ जाउ सतसंग करु, तजि मथुरा मद मान ॥ ४८ ॥

क०-जै जै भगवंत जै अनंत जै रमा के कंत जै जै गुन सिंधु जै जै अगुनाऽविनासी की। जै जै सुख मंदिर जै कृपा सिंधु राघवेन्द्र अनुपम अनादि जै जै अवध निवासी की। जै जै ज्ञान धाम जै अनाम जन मान प्रद पावन सुयस जै साकेत के विलासी की॥ मथुरा अघकारी नाथ पापिन पुनीत कारी कीजिये पुनीत जै जै राम सुख रासी की॥ ४९ ॥ कबहूँ दयाल निज बानि लखि हेरि मोहिं दीनता विचारि दया नेकु उर आनि हौ। मेरे पाप पुंजन की गिनती बिसारि नाथ दया मन लाय निष्पाप मोहिं मानि हौ। आपनो बनाय अपनाय लेहौ दीनबंधु सुनिकै पुकार निज दास मन जानि हौ। मथुरादास आस करि सरन पुकारै नाथ लेहु अपनाय सरनागत के दानि हौ॥ ५० ॥ गिरतो गया हूँ अब सरन तुम्हारे नाथ दीन रख-वारे नाम जाहिरहै आपको। तुम तो हो दीन के दयालु हे श्री-राम भद्र तारेउ नारि गौतम की भरी महा पाप को। बड़े बड़े पापिन औ सापिन पुनीत कीन्हेउ दण्डक पुनीत कै मिटायो ऋषि साप को। मथुरा अपराधी परेउ सरन तुम्हारे नाथ त्राहि

त्राहि राम मेटो भारी भवतापको ॥ ५१ ॥ जै जै सीताराम जै जै भरतु सुजान जै जै लखन शत्रुघ्न जै जै अवध नृपाल की । जै जै कौशल्या जै जै केकई सुमित्रा मातु पवन कुमार जै जै अंजनी के लाल की । जै जै मांडवी श्रुति कीरति उर्मिला जै जै महा ज्ञान वान जै जै जनक भुआल की । जै जै इक्ष्वाकु वंस जै जै निमि-राज वंस मथुरादास मांगै भक्ति राघव कृपाल की ॥ ५२ ॥ मैं हौं अति पापी आप पापिन पुनीत करैं मैं हौं अति दीन आप दीन हितकारी हैं। महा मोह तम में फँसा हूँ कछू सूझत ना आप तौ कृपाल महा मोह तमहारी हैं। मथुरा बल बुद्धि ते विहीन हे दया के सिंधु मगन भवसागर के धार बीच भारी हैं। गहि बाँह लीजिये निकारि हे दयालु राम ग्राह को विदारि गजराज ज्यों निकारी है ॥ ५३ ॥ राम राम कहत लजात मन मूढ़ यह सुनि दुर्वाद अति मानत अनन्द है। सन्त और वेद कवि कोविद बतावैं मार्ग तौन मग चलत ना ऐसो मतिमन्द है। जहाँ कहौं चोरन जुआरन समाज होइ तहाँ जाय प्रेम ते सिखत छल छन्द है। हे हे दीन बन्धु हे कृपाल हे दयाल राम मथुरादास कीजै अवनासि भवफन्द है ॥ ५४ ॥

दो०—नर सरीर कह पाइ जो भजत ना सीताराम।
सूकरहू ते जानिये, नर तन अधिक निकाम ॥५५॥

क०—भक्तन को तारेउ तौ बड़ाई नहीं रावरे की सो तौ प्रभु नीति अनुसार कर्म कीन्हें हैं। नीति अनुसार चले काहू को

न लागै दोष सो तौ निज कर्म बल मुक्ति पद लीन्हें हैं ॥ मैं तौ सुना रावरे की दीन तारि वेकी वानि ताते अब मैं हूँ समर्थ मन दीन्हें हैं। मथुरा अति दीन नीति धर्म ते विहीन नाथ ऐसे मोहिं तारो तौ मैं दीन बन्धु चीन्हें हैं ॥ ५६ ॥ मैं हौं बलहीन और गुन हीन बुद्धि हीन भक्ति ते विहीन और सक्ति ते विहीन हौं। जज्ञ जाप पूजा व्रत जोग तप सन्त संग मोह माया बस सो न छोंड़ि छल कीन हौं ॥ सोहै रावरे के हाथ हे दयाल राघवजी आपही की माया बस पाप में विलीन हौं। आप जानि आपन अपनाइये दया निधान मथुरा निराधार एक आपके अधीन हौं ॥ ५७ ॥ सन्त संग करि सिख लीन्हेउ नहीं मन्दमति धारेउ नहीं राम भक्ति मन में अकाम है। नर तन पाय ना भजे श्री-सीताराम पद खोयो जन्म वादि धनदारा को गुलाम है। चेरो बनि राघव को छोंड़ि जगजाल सब राम नाम मोद ते जपेउ ना आठौ जाम है। मथुरादास चेतु जम जातना निवारन को और ना उपाय एक सीताराम नाम है ॥ ५८ ॥ सन्त संग ते अनेक जन्म के समूह पाप नास होत जैसे तम तरनी प्रकास ते। सन्त संग कीन्हे सीताराम पद नेह होत दिव्य चष होत राम रूप उर भासते। सन्तन सुयस गनि पावै पार कउने कवि आठौ जाम वेद यस गावैं सा हुलासते। मथुरादास सन्त जन संग करु नित्य नेम सन्तन को संग मोद मंगल प्रभासते ॥ ५६ ॥ नाते सब झूँठे नेह छांड़ि भजु राम पद भजन बिना ना तोहिं ठाहर

ठिकाना है। सुत वित नारि गृह कारज में भूलु जनि स्वारथ के मीत अंत संग नहीं जाना है। राम भक्ति वाधक विचारि छाँडु नेह सठ मतिमन्द काहे जगजाल में भुलाना है। राम पद कमल पराग रस मधुकर होइ मथुरादास मोदित पियूष रस पाना है॥ ६० ॥ नर तन पाइ ना नुरागै मन राम पद रागै नहीं राम गुन लागै ना सुसंग में। त्यागै नहीं मोह मद मत्सर विकार जेते मन लागै इन्द्रिन के विषय औ कुसंग में॥ जागै पाप पुञ्ज भार विषय विलास नित्य लागै अनुरागताहि पापिन के रंग में। ताहि यम दन्ड होत कल्प कोटि नर्क वीच ताते लागु मथुरादास राम के प्रसंग में॥ ६१ ॥

दो०—प्रभु पद कमल पराग नित, मधुकर मथुरादास।
वनि सेवहु लहु अमित सुख, छाँडु कपट जग आस॥६२॥

क०—सीस में किरीट कान कुन्डल विराजमान तिलक विशाल भाल सोभा वे प्रमान हैं। तामरस दाम नेत्र विम्बाफल ओंठ राजै भृकुटी मनोज धनु सुखमा महान हैं। राजै सुक तुन्ड सम नासा राघवेन्द्रजी को उर भुज दण्ड बल सोभा के निधान हैं। मथुरादास सिंह कटि चरण सरोज लाल चारों पद आदि अंक करो नित्य गान है॥ ६३ ॥ निज किये पापन की गिनती गिनाऊँ नाथ सारदा औ शेष कभी अंत नहीं पावैंगे। लिखत लिखत गणराजहू न पावैं अंत दिन राति कल्प कोटि सोऊ थकि जावैंगे। यमराज निज पुर हेरि हेरि थकि जइहैं मेरे राखवे के

योग्य ठौर नहीं पावैंगे। तव दरबार की विरद सुनि आयों नाथ मथुरा अति दीन ताहि आप अपनावैंगे ॥ ६४ ॥

स० – राम को नाम जपो निसिवासर और उपाय ना नेकहूँ है। जाप ना योग ना दान दया व्रत पूजा तपस्या न तीर्थहूँ है ॥ धन धाम कलत्र सनेह में नाहक लोलुप कूकर ज्यों सठ तू है। रघुनाथ पदाम्बुज प्रेम बिना मथुरा नर देह शृङ्गाल ज्यों तू है ॥ ६५ ॥

क०—दीन के दयाल दीनबन्धु दीनानाथ नाम दीन हितकारी दया सिंधु वेद गावैं हैं। शम्भु शुक सारदा गणेश बालमीक व्यास राति दिन गावैं यस पार नहीं पावैं हैं। सोई दया सोई गुन सोई यस सुनेउँ नाथ दीन बंधु जानि ताते दीनता जनावैं हैं। वेद औ पुरान संत बचन प्रमान मानि मथुरा त्राहि त्राहि अव सरनि जनावैं हैं ॥ ६६ ॥ दीनन के दानी यस वेदन बखानी राम सब सुख खानी रघुनाथ धनु पानी हैं। जगत के स्वामी सब जीव उर गामी नाथ जैसै राम स्वामी तैसै सीता महरानी हैं। सरन सरन जो सुनावै शब्द आरत होइ बाँह गहि लेत ताहि त्यागव न जानी हैं। ताते यहै जानि दीन आरत पुकारै नाथ मथुरा अपना ओ दीनबंधु दीन दानी हैं ॥ ६७ ॥

स० — सरनागत पालक दीन दयाल का नाम सुना जब कान में है। तब ते मन में हुलसेउ है अनंद की दीन ना मोते जहान में है ॥ अपना वहिगे मोहिं दीन दयाल प्रभू तो लगे

निज बान में हैं। मथुरा अति दीन विलोकि श्रीराघव पालहिंगे यही ध्यान में हैं ॥ ६८ ॥

दो०—श्रीरघुनायक द्वार मह, करु पुकार होइ दीन।
करुनानिधि तब टेर सुनि, पलिहहिं धरम धुरीन ॥ ६९ ॥

स०—आपके द्वार पुकारत आरत आरत नासन हार श्रीरामजी।
मोहिते आरत और ना हैं कहूँ त्रास निवारक आप श्रीरामजी ॥
मोहिते पाप निवासी न है कहूँ पाप विध्वंसन हार श्रीरामजी।
आरत दीन अघी मथुरा तुम हौ निरबाहनहार श्रीरामजी ॥ ७० ॥

क०—कबौं दयासिंधु निज बानि लखि हेरि तोहि दीनता बिलोकि नेकु लाज उर आनिहैं। तेरे पाप पुञ्जन की गिनती करावैं यदि गिनत गिनत शेष सारदा न जानिहैं। सूर्य्यके तनये के गण दन्ड दै दै थकि जैहैं तेरे पापके समान दन्ड नहीं मानिहैं, मथुरा अब चेतु रघुनाथ को सरन ताकु दीनानाथ तेरे पाप मन में न आनिहैं ॥ ७१ ॥ दयाके निधान सरनागत के पालक हैं जग अभिराम रामदीन हितकारी हैं। सरन पुकारे सारे पापन बिसारि देत जैसे निज बालक के पिता महतारी हैं। एही बानि राघव की दीन हितकारी जानु आरत जन पाल रघुनाथ दया धारी हैं। मथुरादास पाहि पाहि सरन पुकार सुनि लेहि अपनाइ राम अवध बिहारी हैं ॥ ७२ ॥ सरन पुकारे महापापी अपनाइ नाथ करत पुनीत अघ मन में न लावैं हैं। गीध व्याध केवट किरात भील कोल आदि किए हैं पुनीत इमि वेदहू बतावैं

हैं। ऐसी बानि राघव की दीन हितकारी सदा दीनता विलोकि ताहि आसु अपनावैं हैं। मथुरा मतिमन्द रघुनाथ की सरन ताकु सरन परे ते सारे पापन मिटावैं हैं ॥ ७३ ॥

स०—भवसागर पार करो प्रभुजी मैं बूड़ि रहा मझधार में हौं। गहि बाँह निकारो दया के निधे फँसा माया औ मोह के जार में हौं। तुमको भवतारक वेद कहैं तौ मैं नाथ तुम्हारे अधार में हौं। नहि जानै उपाय कछू मथुरा फँसा माया के सिंधु अपार में हौं ॥ ७४ ॥ त्राहि त्राहि नाथ हे उबारो भव सागर ते दया सिंधु आपको बतावैं वेद चारिहैं। बड़े बड़े पापिन को पावन बनावैं राम मन में न पाप नेकु करत विचार हैं। सोई दया मथुरा पै कीजिये दया के सिंधु नहीं तौं मैं बूड़ौ भव सिंधु मझधार है। हे हे दीनबन्धु हे दया निधान दीनानाथ पाहि पाहि राम अब कीजै भवपार है ॥ ७५ ॥ राजनके राजा महाराजा जो श्रीरामभद्र अवध नृपाल नाथ विनय यह मेरी है। दीनानाथ विनती यह दीन की सुनाई होय मैं हौं अतिदीन ताते प्रभु से ही टेरी है। प्रभु के समान और दीन काज करै कौन रावरे की बानि सदा दीन हित केरी है। मथुरादास आस करि आरत पुकारै नाथ लीजै अपनाय जनि दीजिये खदेरी है ॥ ७६ ॥

स०—निवेदन है की समीप में आपने राखिकै सेवा में लाओ प्रभू। सबसे लघु काम करौं मैं सबै निज जूठन रोज

पधाओ प्रभू। मथुरा भुवि भारत मध्य प्रदेश अमिलकी का दास बनाओ प्रभू। प्रभु के पद त्रान उतारे रहैं सिर धैकर सोऊँ बताओ प्रभू ॥ ७७ ॥

क०—नाथ मैं सुना की दीनबन्धु दया सागर हैं दीनता विलोकि नेकु दया उर लाइहैं। मैं हौं महा दीन जग दूसरो ना दीन मोते सोई मन आनि नेकु श्रद्धा सरसाइ हैं। उर में भरोस करि याही आस राखि मन केहूँ विधि नित्य नित नाथ गुन गाइहैं। साँची साक वेदजो भरैहै महाराज राम मथुरा सत्यरावरो गुलाम पद पाइहैं ॥ ७८ ॥

दो०— अब मथुरा गुन गान कर, होइ निसोच मन माहिं।
सन्त संग करु नाम जपु, शरण गहु भय नाहिं ॥ ७९ ॥

दोहा—श्रीगणेश श्रीभारती श्रीअंजनी कुमार।
श्रीमहेश श्रीगुरु चरण, बन्दौं बारम्बार॥
श्रीराघव पद कमल, रति चाहत मथुरादास।
होइ प्रसन्न कीजै सफल, दीन दास की आस॥

भजन

१—मन तैं राम भजन विसरायो।
तेहिं ते जग अनेक जोनिन भ्रमि क्लेश विविधि विधि पायो॥
जिमि अनेक नाते सनेह मह नित नए नेह बढ़ायो।
तिमि रघुपति पद कमल हेतु तैं कबहुँ न प्रेम लगायो॥
देखि कर्म वस भव दुख तोहिं पर प्रभु अति कृपा जनायो।
दीन्हेउ अति पावन नर तन तोहिं सुरदुर्लभ श्रुति गायो॥
मथुरादास भजन बिन प्रभु के नर तन वृथा कहायो।
भजहु राम पद कमल छांड़ि छल नहिं कछु और उपायो॥

२—हे प्रभु मन हठि तजत न मोर।
बार बार सिख देउँ विविधि विधि नहिं मानत बरजोर॥
चलत कुपन्थ त्यागि श्रुति मारग देत अमित झकझोर।
पावत दुख मानत नहिं नेकहुँ ऐसो कठिन कठोर॥
अब प्रभु याहि डाटि सिखवहु तुम दशरथ भूप किसोर।
मथुरा पाहि पाहि श्रीराघव सरन पुकारत तोर॥

३—प्रभू तुम्हारे सरन में आया उबारि लो तो है हानि ही क्या। अनेक दुष्टों को तुम सँभाले हमें सँभालो तो हानि

ही क्या ॥ हे प्रभू तुम ब्रह्म हो मैं जीव हूँ तो आपही का। प्रभु कि माया से बँधा हूँ छोड़ाइ दो तो है हानि ही क्या ॥ अगर य मथुरा खराब है तौ या भला है तौ आपही का। आपका है समीप रखलो न हो हटा दो तो हानि ही क्या ॥

५--जो अपना दरस रघुनन्दन देखा दोगे तो क्या होगा।
हमैं है प्यास दरसन की पिला दोगे तो क्या होगा ॥
अनेकों पापियों के तुम दया वस सोक टारे हो।
हमैं है सोक दरसन का मिटा दोगे तो क्या होगा ॥
पतित पावन विरद सुनकर सरन मैं नाथ आया हूँ।
पतित मैं सबसे बढ़कर हूँ सँभालोगे तो क्या होगा ॥
विरद की ख्यालकर प्रभुजी पतित लखि बाँह गहि लीजै।
य मथुरादासऽगर अपना बनालोगे तो क्या होगा ॥

६--बिना रघुनाथ को जाने जगत में व्यर्थ जीना है।
पाय कर देह मानुष का भजन श्रीराम का छोड़ा।
कभी सत संग नहीं कीन्हा दया उर में न कीना है ॥
न पर उपकार मनलायो न लीन्हेउ नाम राघव का।
न तीरथ धाम जाकर तू प्रभू का दरस लीना है ॥
वृथा बकवाद में पर कर न कीर्तन राम का गायो।
तौ अमृत बदल कर अपने हाथ लै विष का पीना है ॥
तो मथुरादास अब चेतो न भूलो जगत खोटे में।
भजो श्रीराम को जिसने तुम्हे यह जन्म दीना है ॥

७ प्रेम हो श्रीराम चरणों में ही होना चाहिये।
रात दिन श्रीराम ही का ध्यान होना चाहिये॥
प्रेम से प्रहलाद ने श्रीराम का सुमिरन किया।
बिस्वास हो प्रहलाद जैसा प्रेम होना चाहिये॥
ध्रुव निरन्तर नाम प्रभु का प्रेम से बनमें जपा।
प्रभु जायकर दिय अचल पद इमि प्रेम होना चाहिये।
हनुमान कीन्हेउ प्रेम तौ रिनिया बनायो नाथ को।
सवरी खवायो बेर ऐसा प्रेम होना चाहिये॥
पायो विभीषण राज लंका राम प्रेम प्रभावते।
सोऊ दियो प्रभु सकुचि ऐसा प्रेम होना चाहिये॥
श्रीराम पद में प्रेम करु मथुरा न आन उपाउ है।
भव से जो होना पार है तौ प्रेम होना चाहिये॥

८—भवसागर अति अगम कहँ पार जान जो चाहु।
तौ मथुरा प्रभु चरण मह अविरल प्रेम निबाहु॥

९—भजन--मन अब राम चरण उर धारै।
जिन चरनन ते गंग प्रगट होइ सब पापिन कँह तारै।
जिन चरनन शिव मन मानस में जुगल हंस जिमि राखैं।
ध्यान करत जिन चरण कमल श्रीराम नाम मुख भाखैं॥
जिन पद रज कहँ पाइ अहिल्या निज अघ ओघ मिटाई।
मन भावत वर पाइ भक्ति दृढ़ पति सँग भवन सिधाई॥
जिन चरणन की भक्ति निरन्तर नारद सबहिं बतावैं।
तेइ पद कमल छांड़ि छल मथुरा अब निसि वासर ध्यावैं॥

१०--है नाम श्रीरघुनाथ का सुर धेनु सम कलिकाल में।
सेवत पदारथ चारि लहि नहिं परत भवके जालमें॥
श्रीराम नाम कृसानु ससि अरु सूर्य का जो हेतु है।
कलिकाल भवनिस्तार हित भवसिंधु का सोइ सेतु है॥
निज प्रणत जन कल्याण हित श्रीराम नाम उदार है।
अघ रासि करिबर जूथ नासन हेतु सिंह कुमार है॥
है नाम बढ़कर राम ते पतितन पुनीत बनावनो।
भक्तन अभयदायक दसहु दिसि हृदय मोद बढ़ावनो॥
मद मोह नासन हेतु कलि महं नाम मनहुँ कृशानु है।
जपहु निसिदिन नाम मथुरादास मोद महानु है॥

दो०—सत संगति कीन्हेउ नहीं, किहेउ ना हरि पद नेह।
श्रवन सुनेउ नहिं हरि सुयस, वृथा धरेउ नर देह॥

११--नर देह ते हरि के चरण में नेह होना चाहिये।
सत संग करि भवसिंधु के उस पार होना चाहिये॥
संसार सागर पार हित नर देह पूर्ण जहाज है।
रघुवर अनुग्रह मरुत खेवनहार गुरु सिरताज है॥
एहि भांति पाइ समाज दुर्लभ जात नहिं भवपार जो।
हत भाग्य अपने हाथ आपन सीस काटनहार सो॥
प्रभु चरण पंकज प्रेम मथुरादास करु मन लाइकै।
रघुनाथ चरित उदार कीर्तन करहु गुन गन गाइकै॥

१२--जग में राम नाम सुख मूल।

राम नाम जन हृदय सुद्ध करि मेटत सब भव सूल।
राम नाम जो जपत निरन्तर नहि आवत भवभूल।
नाम जपत सूखत भवसागर राम रहत अनुकूल॥
यह कलिकाल कठिन भयकारी नाम करत निर्मूल।
मथुरादास नाम जपु निसिदिन तजि जगजाल समूल॥
१३--दया सिंधु दरसन देखाना परेगा।
भलों को खलों से बचाना परेगा॥
दयासिंधु तुमको कहैं वेद चारों दया दृष्टि हम पर देखाना परेगा। सुना है गरीबों को अपनाते हो, तुम तो हमको भी अपना बनाना परेगा। य मथुरा न पावन बनाये दया मय दया हीन कहि के बताना परेगा॥
१४--हे राम मैं अघ रासि हौं भव सिंधु अगम अपार।
शुभ कर्म ते हौं हीन प्रभु तुम हौ निवाहन हार॥
अनगिनित पाप निवासियों के दोष सब विसराय।
निज विरद की सुधि करि दयानिधि लीन तिन अपनाइ॥
मैं पतित हौं सब भांति ते अघ खानि हौं हे नाथ।
तव पतित पावन नाम है श्रुति बदत इमि गुन गाथ॥
अब राखि सरन विसारि पापन लीजिये अपनाय।
तव चरण कमल विहाइ मथुरहि ठौर नाहिं दिखाय॥
दो०--भवसागर के तरन लगि, नहिं कछु आन उपाउ।
मथुरा निसि दिन नाम जपु, प्रेम सहित यस गाउ॥

*** छन्द ***

१५- जै रघुनन्दन मुनि मन रञ्जन जन दुख भंजन रघुराई ।
जै सरसिज लोचन भव भय मोचन सोक विमोचन सुखदाई
जै जै असुरारी जन हितकारी अवध विहारी सुरराई ।
जै जै सुख धामा पूरन कामा अभिरामा जग समुदाई ॥

१६-हे राम सीतेस सर्वेस सोकापहं सरन दुखहरन जन सानुकूलं ।
जयति अंजनी सुमन हृदय पंकज भृंग नमत सुरसिद्ध मुनि पादमूलं ॥ नील अम्भोज वर गात विछुच्छटा सच्चिदानन्द आनन्द रासी । जगत अभिराम तन कोटि सतकाम छवि त्रिपुर अरि हृदय पंकज निवासी ॥ कनक मनि रतन कृत मुकुट अति सुभग सिरभानु सतकोटि समभासमानम् । कनक कुन्डल मकर रुचिर मनिरत्न युत मनहु विद्युच्छटा लसत कानम् ॥ केश कुञ्चित असित भ्रमर वर अवलिसम देखि मन होत अति हर्ष भारी । तिलक वर भाल द्विति मान सोभा सदन तड़ित सम लसत उद्योतकारी ॥ अरुन राजी बदल चक्षु जग सुखद वर भृकुटि धनु मदन सोभाति राजै । श्रवन सुन्दर सुकपोल सुखमा सदन नासिका तुन्ड वर कीर भ्राजै ॥ दसन की पंक्ति वर कुन्द आभा सुमन अरुन बिम्बोष्ठ शुचि चिवुक सोहै । मन्द मुसकानि मन हरनि आनद करनि मुनि मनुज सिद्ध सुर देखि मोहै ॥ कम्बुकल कन्ठ भुज पीन आजानु वर सरिस कर कलभ

सोभाति भारी। अरुन अम्भोज कर करज नख मनि सरिस भक्त जन चित्त आनन्दकारी ॥ कनक मनि जटित अंगद सुकंकन लसै मुद्रिका रत्न जुत भ्राजमानं। चिह्न द्विज चरण उर उच्च भूषनन जुत तुलसिका माल सोभाय-मानं ॥ विविधि भूषन रतन मनिन संजुत विमल वैजन्तिका माल बनमाल धारी। कर कमल वान धनु लसत तूनीर कटि नाभि अति रुचिर गम्भीर भारी ॥ वृषभ वर कन्ध कटि केहरी पीतपर तड़ित निन्दक सुभग अंगधारी। उदर त्रै रेख वर पीत उपवीत धर कदलि सम जंघ बलवन्त भारी ॥ जानु बलवन्त अरु गुल्म बलवन्त अति अरुन वर कमल पद सुखद भारी। वज्र ध्वज कंज अंकुश सु चिह्नि चरण भक्त जन हृदय आनन्दकारी ॥ पदज सुठि सुभग नव अरुन अम्भोज सम नखन की ज्योति अनुपम सुहावै। दास मथुरा सु प्रकास आनद करन हृदय धरि सदा गुन गान गावै ॥ सकल मलमूल कलिकाल दुस्तर महा जोग जप दान तप मख पूजा। राम गुन गान आधार भवतरन हित और न उपाय यहि काल दूजा ॥

१७--रघुवन्स भूषण राम हे रघुवन्स भूषन राम।
हैं पतित पावन वान हे रघुवन्स भूषन राम ॥
श्रुति विदित है विरदावली हैं अधन के धन राम।
नाम के आधार ते जन होत पूरन काम ॥

गिरिजा गणेश महेश विधि गुन करत निसिदिन गान।
कालकूट महेश कह भो सरिस अमृत पान ॥
सबरी अजामिल गीध गनिका कौन जप तप कीन।
विरद ही की लाज प्रभु अपनाइ सब कहँ लीन ॥
दास मथुरा हीन सब विधि कीन पाप अघाइ।
सरन दीन दयाल अब मोहिं लीजिये अपनाइ ॥

१८–जै जयति कृपाला दीन दयाला दशरथ लाला भयहारी।
जै सरसिज लोचन सोक विमोचन जनहित सोचन धनुधारी ॥
गो ब्राह्मण त्राता जग पितु माता दीन सुभ्राता असुरारी।
सुर महिं हितकारी जयति खरारी गौतम नारी अघहारी ॥
मैं हौं अघ रासी तुम अघनासी सब सुख रासी रघुराई।
तुम दीन पियारे वेद पुकारे जन रखवारे सुखदाई ॥
यह बानि तुम्हारी दीन अघारी भवभयहारी सुख सिन्धो।
मथुरा अपनावो सरन टिकावो सरन पाल आरत बन्धो ॥

१९–भजन—मन अब राम चरण चित लावै।
अउर न कछुक उपाय जगत सागर तरिबे कहँ पावै ॥
केवल राम चरन चिन्तन अरु राम नाम गुन गावै।
राम भगत जहँ मिलैं जाइ तहँ नित चरणन सिर नावै ॥
सन्त संग ते मिलै अमित सुख लहि उर आनद छावै।
द्रिग ते दरस राम गुन मुख ते कर गुरु सेवा लावै ॥
सन्त संग सम स्वर्ग अउर अपवर्ग न कहुँ सुख पावै।

सुत वित लोक ईसना तजि सब नाते नेह बहावै ॥
राम कमल पद सन्त संग मह नाते नेह लगावै ।
मथुरा श्रीहरि चरण कमल भजि जीवन सफल बनावै ॥

२०--हरि तजिहि तू और नहिं पइहौ ।
जगमह भटकि भटकि निसिवासर जिन हित पाप कमावै ।
ते तोहिं स्वान सरिस त्यागहिं कस तू न अबहिं तजिजावै ।
मीजि मीजि कर पीटि पीटि सिर रोवत पार न पावो ।
तेहि ते मानु मानु शिक्षा जड़ राम नाम गुन गावो ॥
प्रणत पाल रघुनाथ कृपानिधि मन जनि तनिक डेरावो ।
पिछिले दोष क्षमहिं श्रीराघव अब जनि फेरि कमावो ॥
अबहठि छोंड़ि मानुसिख जड़र्जनि दुखभाजन बनिजावो ।
मन तन बचन छांड़ि छल मथुरा प्रभु सन नेह लगावो ॥

२१ छं०--मथुरा सठ तूँ अब ध्यान करो, रघुनायक का गुन गान करो । ध्रुव आदिक जो हरि नाम अधार, कियो तुम क्यों न अधार करो ॥ यस पावन राम का गान करो, चरणाम्बुज में दृढ़ प्रेम करो । अरु सन्तन का नित संग करो । जप राम के नाम का नेम करो ॥ धरु ध्यान सदा रघुनायक का, कर लीन्हें महा धनुसायक का । सिर क्रीट में कोटिन भानु प्रभा, मुखमान हरै रति नायक का ॥ श्रुति कुन्डल सुन्दर भ्राजसदा, भृकुटी धनु ज्यों रतिनायक का नासासुक तुन्डसमान लसै, दरकन्ठ महासुखदायकका ।

वृष कन्ध उच्च शुचि यज्ञ सूत्र, भूषन जुत पीन अजानु भुजा। कटि सिंह नाभि गम्भीर रुचिर, पद अरुन कमल कुलिसादि ध्वजा ॥ सिंहासन कञ्चन जड़ित रत्न, रवि कोटि सरिस भासै प्रकास, सीता समेत रघुवन्स तिलक, उपमा तन कोटिन मदन भास ॥ भरतादिक भ्रातन से व्यमान, सन्मुख मारुत सुत बेद कहैं। मुनि विश्वामित्र बसिष्ठ आदि, छवि सिंधु देखि आनन्द लहैं ॥

दो० छवि समुद्र रघुबर चरण उर धरु मथुरादास।
ध्यान सकल कल्यान प्रद हरन सकल भव त्रास ॥
धर्म नेम व्रत सकल के वीज राम गुन गान।
महाँ भीम भव रोग के, विबुध वैद्य सुखदानि ॥

२२ भ०--श्रीसीताराम की शोभा सकल दुनिया से न्यारी है।
विधाताजी की भृष्टी में न ऐसा देह धारी है ॥
मदन रति कोटि सत जिनके कलेवर में निछावरि है।
न पटतर जोग रचि पाया विधाता बुद्धि हारी है ॥
जो ब्रह्मा विष्णु शंकर के रचैया एक पल भर में।
विनासक भी वही दोनों अयोध्या के विहारी हैं ॥
तु मथुरा दास निसिवासर श्रीसीताराम छवि ध्याओ।
करो गुन गान लखु लीला नाम जपु मोद कारी हैं ॥

२३ छ०--अति पतित हौं अतिदीन हौं सब भाँति ते मैं हीन हौं।
भव सिंधु ते निस्तार हित कछु जतन कबहुँ न कीन हौं ॥

मैं महा पाप पहार हौं केवल मही का भार हौं।
जानौं न कछुक उपाउ प्रभु एक आप नाम अधार हौं॥
है नाम दीनानाथ दीन दयाल आरत हर प्रभो।
सुनि विरद मथुरादास नाम अधार करि पायो विभो॥
निज नाम की विरदावली लखि लीजिये रघुनाथजी।
अति दीन हौं राखिय सरन श्रीराम दीनानाथ जी॥

२४-मनतैं राम नाम निसिबासर जब लगि उर न टिकैहैं।
जब लगि सीताराम चरण पंकज हियमें नहिं ध्यइहैं॥
जब लगि पदज नखन के द्युतिते हिय के तम ना मिटैहैं।
जब लगि श्रीरघुनाथ गुनन के गान न मुखते गैहैं॥ जब लगि सन्त समाज संग करि शुभ उपदेश न लैहैं। जब लगि मन शुचि करि राघव के तीर्थ करन नहिं जैहैं॥
जब लगि खटविकार तजि प्रभु की भक्ति हृदन जमैहैं।
तब लगि मथुरादास स्वप्नहूँ तें सुख कतहुँ न पैहैं॥

२५-जब रवि जाइ छिपत अस्ताचल अन्धकार जग छावै।
तब द्विजराज और उडुगन मिलि निज प्रकास दरसावै॥
सकल पहार जगत मह जेते तिनमह अग्नि जरावै।
पै विन उदय भये तमारिके जग तम कोउ न मिटावै॥
संयम यज्ञ जोग नाना व्रत दान दया शुभ कर्मा।
तीर्थाटन साधन द्विज सेवा अरु वर्णाश्रम धर्मा॥
सब करि थकै तरै नहिं भवनिधि विन रघुपति पद प्रेमा।
भ्रम तजि भजु रघुनाथ चरण जुग करु मथुरा दृढ़ नेमा॥

२६-मनतैं राम कहत अलसात।
विषय हेतु दौरत कूकर ज्यों लजत न गुरु पितु मात।
लोक वेद कुल कानि त्यागि सठ खल गन संग सोहात॥
उलटो सीधो होइ केहूँ विधि करत स्वार्थ की बात॥
जहँ कहूँ राम कथा संतन संग तह धोखेउ नहिं जात।
वृथा जन्म जनि खोउ मूढ़ अब भजहु राम रघुनाथ॥
मानु मानु जो कहत सन्त श्रुति नहिं पीछे पछितात।
रौरव नरक माहिं जब जमगन ताड़त पीसत दाँत॥
जब जम गृह इज्हार भरन कहँ जुगुति न एक लखात।
मथुरा जिनहित कियो अमित अघ ते कोउ साथ न जात॥

दो० - ससि ते पावक प्रगट हो वारि मथे धृत होय।
भवसागर के तरन हित है उपाय नहिं कोय॥

२७--हे राम तुम सर्वेस हो अरु जीव हौं मैं आपका।
तब भक्ति ते वंचित भयों जानौं न पूजा जापका॥
केहि भांति नैया पार हो भव सिंधु अगम अपार है।
हे नाथ मोहि सूझत न कछु अब फँसा ममर मझार है॥
यदि पार कर लें आप तो आप दीनानाथ हैं।
पार करलें या न करलें आपही के हाथ है॥
सब आपही सामर्थ हैं कुछ है किसी का वस नहीं।
चर अचर जल थल व्योम व्यापक एक प्रभु हैं आपही॥
आप बिन जग में न दूजा दीन तारन के लिये।

अन गिनित पापिन आप अपने बान ते पावन किये॥
मथुरा पुकारत सरन प्रभु सुनिये गिरा अवदीन की।
पाहि हे रघुनाथ आरत बन्धु सब गुन हीन की॥
२८--हे दीनबन्धु दयाल राघव आस पूरण कीजिये।
करुणा निधान सुजान दीन विचारि अपना लीजिये॥
मेरे अघों को नाथ अब मन में न नेकहु लाइये।
आपनि सुबानि विचारि हे रघुनाथ अब अपनाइये॥
मेरे अघों को देखि जमपुर कल्प कोटि जो राखिहैं।
तब लगि न रवि सुत मुक्त करिबे हेतु मुखते भाषिहैं॥
मेरे सरिस अनगिनित पापिन नाथ तुम अपना लिये।
सोई सुयस सुनि दीन मथुरादास है अरजी किये॥
२९--सुना है नाथ पतितों को जगत पावन बनाते हैं।
न जानैं झूँठ या साँची वेद दिन राति गाते हैं॥
सरन में आ परा प्रभु जी हमें पावन बना लीजै।
तो मैं भी जानि लूँ प्रभु की वेद यस सत्य गाते हैं॥
भला प्रभु मैं ये जड़ मति ते कौन विधि आपको जानैं।
बिना चाखे पदारथ को नाथ किमि स्वाद पहिचानैं॥
य मथुरा की दीन बानी दया निधि सुनि न बहिरावो।
पतित पावन जो हो राघव हमैं अब नाथ अपनावो॥
३०--कबहुँक मन सियराम चरण मह निसिदिन प्रेम लगइहौ।
तजि जग जाल तुच्छ त्रिणवत सब संत संग सुख पइहौ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब कबहुँ बहइहौ।
सिय रघुनाथ सुयस कीर्तन अरु राम नाम मुख गइहौ॥
निज कारज लगि करम बचन मन कबहुँ न काहु सतइहौ।
पर के पाप देखि नयनन ते कबहुं न कहुं प्रगटइहौं॥
आपन किये सुकर्म बचन मन कबहुं न नेकु सुनइहौं।
रिपु अरु मित्र एक सम लखि कर तनिक न तर्क बढ़इहौं॥
दुखित देखि दीनन कहँ तू कहुं तिनके दुखहिं मिटइहौं।
अन इच्छित जो आय मिलै तेहि मह सन्तोष लगइहौं॥
प्रतिदिन सीताराम चरण जल प्रमुदित जूठन पइहौ।
मथुरादास कहाइ राम को जीवन सफल बनइहौ॥

३१--दीनबन्धु रघुनन्दन तुमको केहि विधि विनय सुनाऊँ।
वेद विरुद्ध आचरन है ममतौ किमि गुनगन गाऊँ॥
जो कछु करौं सुकर्म रेणु सम गिरि सम करि प्रगटाऊँ।
पर्वत सम निज किए पाप उर गुप्त राखि न जनाऊँ॥
पर धन हरन लागि नाना विधि जतन करौं मन माहीं।
पर उपकार बचन मन तनते स्वप्नेहु आनत नाहीं॥
किये पाप औरन के रजसम सहस बदन जिमि गावौं।
परके किए सुकर्म देखि तेहिं मह बहु दोष लगावौं॥
जग मह जेतने दोष विविधि विधि सो मोहिते नहिं बाँचैं।
जो सुकर्म श्रुति कहत निरन्तर जानौ झूँठ न साँचैं॥
जद्यपि सब गुण कर्म हीन मैं तद्यपि हौं प्रभु केरे।

जेहि ते होहु प्रसन्न नाथ तुम सो उपाव नहिं मेरे ॥
हौं अवगुन को उदधि निरन्तर तुम दयाल श्रुति गावैं ।
तेहि ते कछुक ढिठाइ नाथ कहँ निज दीनता जनावैं ॥
दीन दयाल कहावत राघव मोहिते दीन न कोई ॥
मथुरादास करहु दयाल अब तबहि कृतारथ होई ॥
३२--श्रीरघुनाथ चरण पंकज मन मानस निसिदिन ध्यावै ।
जेहिंपद कमल भजन बिन केहुँ विधि जीव न कहुं सुखपावै ॥
जो छल छोह छांड़ि निसि वासर राम भजन उर धारै ।
तौ भवसिन्धु अपार विनहिश्रम उतरत लगहिं न वारैं ॥
भजन बिना कौशल किसोर के कतहुँ ठौर नहिं पइहैं ।
धोबी कैसो स्वान घाट घर भ्रमि भ्रमि समय वितैहैं ॥
प्रेम भक्ति बिन चरण कमल के जग नहिं कतहुँ ठिकाना ।
मथुरादास अनेक जोनि भ्रमि क्लेश विविधिविधिपाना ॥
३३--मन तैं भजन बिना पछितइहैं ।
जब जमदूत मारि सिर मुगदर फाँसी गले लगइहैं ॥
सूर्य तनय के निकट ठाढ़ करि जब इजहार करइहैं ।
तब जिन हित किय पाप निरन्तर ते कोउ दादि न दइहैं ॥
केवल एक कर्म है संगी शुभ अरु असुभ जो करिहैं ।
शुभ कारज ते मिटत पाप अरु अशुभ ते नर्कहि परिहैं ॥
तौ शुभ कार्य बने नहि तोहि ते अशुभ माहिं मन लायो ।
मथुरा अजहु राम पद सुमिरहु तुमहिं न आन उपायो ॥

दीनानाथ नाम है प्रभु को दीन शब्द सुनि पइहैं ।
कोटि जन्म के पाप दया निधि छन मह मेटि बहइहैं ॥

✲ चौपाई ✲

३४--जो यहि बार चूकिहौ भाई । तौ पुनि कोटिन जन्म नसाई ॥
तेहि ते राम सुयस नित गावौ । अरु सतसंग माहि मन लावौ ॥
राम भजत सुख मन मह आवैं । सन्त पुरान उपनिषद गावैं ॥
सुर दुर्लभ तन नरको पायो । राम भजन बिन वादिगमायो ॥
जो मारग श्रुति साधु बतावैं । तेहिंमग चलत जीव सुखपावैं ॥
जो इमि चलहु मानि विस्वासा । तौ तब मिटहिंसकल भवत्रासा
ज्ञान बुद्धि जुत नर तन पायो । वादिताहि करि विषयगमायो ॥
नर तन भजन बिना नहिं सोहै । जैसे मेघ बिना जल कोहै ॥
दो० – अस विचारि मन आनि ध्रुव राम चरण चितलाउ ।
न तरु जलधि भव अगम ते, बचब न आन उपाउ ॥
३५ भ०–मन हरि भजन बिना पछितइहैं ।
जहँ जहँ कर्म विवस नभ जल थल जोनि अनेकन पइहैं ॥
भटकि भटकि कूकर समान करि कोटिन जुगुति लगइहैं ।
पै सिय राम भजन विहीन मथुरा कहुं सुख न कमइहैं ॥
३५ - नर तन अति दुर्लभ है भाई ।
नरतन सम न और तन दूजो भजन हेतु श्रुति गावै ।
श्रीरघुनाथ भजन एहिं तन ते भली भांति बनि आवै ॥
सुर दुर्लभ तन मिलेउ तोहिं तो अब जनि चूकहु भाई ।

भवनिधि तरन हेतु यहि कलिमह नहिं कछु आन उपाई।
सीता राम सुयस कीर्तन अरु नाम जाप कलि माहीं।
क़ाम धेनु सुर तरु समान लखु और जतन कछु नाहीं॥
अस विचारि सियराम कमल पद भजु मथुरा छल त्यागी।
सीताराम भजन सन्तन संग होहु अमल अनुरागी॥

३६ कु०--स्वामी दीन दयाल अब भवसागर मझधार।
बूड़त हौं गहि बाँह प्रभु लीजै तुरत निकार॥
लीजै तुरत निकार फँसी मझधार में नइया।
मैं हौं बुद्धि विहीन नहीं कोउ साथ खेवइया॥
टूटी है यह नाउ नाथ उर अन्तरजामी।
मथुरा दीन पुकार सुनहु रघुनन्दन स्वामी॥

३७--चातक सम मथुरा रटहु रघुपति नाम उदार।
इस असार संसार मह राम नाम है सार॥
राम नाम है सार सकल आनद कर दाता।
जपहु निरन्तर नाम जपत जेहि शंकर धाता॥
मानु कहत जो सन्त जपत जेहिं नासत पातक।
अउर न आन उपाउ नामरटु जिमिरट चातक॥

३८--चिन्तामणि सियराम यस सन्तन प्राण अधार।
दानी भुक्ती मुक्ति के धर्म धाम दातार॥
धर्म धाम दातार राम यस मंगल कारी।
गुरु साँचे वैराग्य जोग के परम विचारी॥

सीय राम पद प्रेम जनक प्रभु सुयस धन्य धनि ।
दुख दारिद अपहरत राम गुन श्रीचिन्तामणि ॥
३९--बिन जलके जैसे सरित जथा जीव बिनदेह ।
वेद कहत नरदेह तिमि बिन हरि चरण सनेह ॥
बिन हरि चरण सनेह देह नर कउने कामा ।
जोन भजै श्रीराम छांड़ि जगजाल निकामा ॥
योग जज्ञ व्रत दान तपस्या वेद कहे जिन ।
मथुरा सब वेकाम एक सियराम भजे बिन ॥
४०--जो मोहिं राखहु सरन निज दीनबन्धु रघुनाथ ।
तब तुम दीन दयाल हौ न तु झूठै गुन गाथ ॥
न तु झूठे गुन गाथ राति दिन वेद बखानैं ।
बिन चाखे पकवान नाथ किमि स्वादहिं जानैं ॥
आज्ञा यह होइ जाइ लीन्ह निज सेवा में तोहिं ।
जानौ दीन दयाल कौन प्रभु आपन जो मोहिं ॥
४१--दानी दीनन के प्रभू वेद कहत यस गाय ।
चरण कमल तर गिरि परेउ मथुरहिं लेहु उठाय ॥
मथुरहिं लेहु उठाय अउर नहिं ठौर देखाई ।
कोउ है कतहुं न और मातु पितु सुत त्रिय भाई ॥
जो करि सकै सहाय निरंतर मन तन वानी ।
मथुरा हित प्रभु आप औ नहिं दूसर दानी ॥
४२छं०-रामकर कमलकी छाँहगहु छांड़िछल अउर नहिं आनकी
आस कीजै । छाँडु मदमोह मत्सर भयंकर क्रोध--बोध

जुतनाम जपि मोदलीजै। जगतहित लागि निज सक्ति भर जतनकरु सबहि निस्काम कल्यान कीजै। दासमथुरा सबहि मिलहु अति प्रेम जुत करहु उपदेश जेहि कलुष छीजै ॥

दो०—श्रीगुरु चरण प्रसाद ते विरचेउ सुयस पवित्र।
निज मति के अनुसार ते श्रीरघुनाथ चरित्र ॥
जो यह भक्ति विलास कह पढ़हिं सुनहिं मनलाय।
सो भवसिंधु अपार ते बिन प्रयास तरि जाय ॥
प्रेम सहित सियराम यस पढ़हिं सुनहिं मन लाय।
तिनके सब मन कामना अवसि सिद्ध होइ जाय ॥

४३ छं० -जेहिं कुल सीताराम चरण के भक्त जन्म कहुँ पावै।
सो कुल एकइस पुस्ति बिनहिं श्रम भवसागर तरि जावै ॥
तेहिते सीताराम भक्ति करि यह उपदेश करीजै।
भवसागर तरिवे लगि मन दै राम भक्ति दृढ़ कीजै ॥
श्रीसीता रघुनाथ कमल पद मन मधुकर बनि जाओ।
करि उपकार बचन तन मनते जग जस विमल कमाओ।
श्रीरघुनाथ चरण पंकज के प्रेम पात्र बनि जावै।
मथुरादास ताहि सम जग मह और न पटतर पावै ॥

दो०—भारत मध्य प्रदेश महरीवा राज्य महान।
तह हजूर तहसील मह ग्राम अमिल की जान ॥
द्विज रघुनाथदास सुत शिव सहाय मति मान।
तस्यात्मज मथुरा कियो भक्ति विलास बखान ॥

वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
दास छावनी सेवा ट्रस्ट